संपादकीय जागरण

सोमवार, 16 जुलाई, 2018 : आषाढ़ शुक्ल 4 वि. 2075

अनीति के रास्ते पर चलने वाले का बीच राह में ही पतन हो जाता है

मानसून सत्र की तैयारी

संसद के आगामी सत्र के पहले विपक्ष के तीखे होते तेवर कोई नई बात नहीं। आम तौर पर संसद के हर सत्र के पहले विपक्ष ऐसे ही तेवर दिखाता है। उसकी ओर से विभिन्न मसलों पर सरकार से जवाब मांगने में हर्ज नहीं। सच तो यह है कि विपक्ष का काम ही है सरकार से जवाब-तलब करना, लेकिन मुश्किल यह है कि वह जवाब मांगने के नाम पर हंगामे की राह पकड़ता है। पिछले सत्र यानी बजट सत्र में उसने ऐसा ही किया और उसका नतीजा यह हुआ कि उस सत्र में करीब-करीब न के बराबर काम हुआ। सबसे खराब बात यह रही कि वित्त विधेयक बिना किसी बहस के ही पारित कराना पड़ा। यह सही है कि देश की राजनीति चुनावी वर्ष में प्रवेश कर गई है और आम चुनाव के पहले कई राज्यों में विधानसभा चुनाव भी हैं, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि संसद में कोई कामकाज ही न होने दिया जाए। दुर्भाग्य से पिछले कुछ समय से सत्र शुरू होते ही संसद में गतिरोध कायम हो जाता है और कई बार तो वह टूटता ही नहीं। ऐसा इसलिए अधिक होता है, क्योंकि पक्ष-विपक्ष की ओर से गतिरोध तोड़ने की कोई पहल ही नहीं होती। बजट सत्र में जब विपक्ष नारेबाजी करके संसद की कार्यवाही बाधित करने में लगा हुआ था तब सत्तापक्ष भी यही संकेत अधिक दे रहा था कि यदि संसद में कोई काम नहीं होता तो उसे इसकी परवाह नहीं। इस बार वह ऐसे रवैये का परिचय नहीं दे सकता, क्योंकि कई महत्वपूर्ण विधेयक पारित होने हैं। सत्तापक्ष और विपक्ष को यह समझना होगा कि यदि संसद अपना मूल काम ही नहीं कर पाएगी तो फिर उसके साथ-साथ भारतीय राजनीति की भी गरिमा गिरेगी। अगर संसद महत्वपूर्ण मसलों पर चर्चा करने और कानून बनाने में असमर्थ रहती है तो फिर राजनीतिक दल एक तरह से देश की राह रोकने का ही काम करेंगे।

यह शुभ संकेत नहीं कि संसद का मानसून सत्र शुरू होने के पहले ही कांग्रेस ने टकराव की राह पर चलने के इरादे प्रकट कर दिए। तीन तलाक संबंधी विधेयक पर विपक्ष की आलोचना वाले प्रधानमंत्री के बयान पर कांग्रेस की आपत्ति स्वाभाविक है, लेकिन अगर इस आपत्ति के बहाने संसद को बाधित करने की कोशिश की जाती है तो इससे यही साबित होगा कि उसकी दिलचस्पी इसमें नहीं कि संसद चले। बेहतर होगा कि सत्तापक्ष विपक्ष के इरादों को भांपते हुए ऐसी रणनीति बनाए जिससे टकराव टाला जा सके और जरूरी विधायी काम आगे बढ़ाए जा सकें। जैसे विपक्ष को यह नहीं भूलना चाहिए कि शासन के संचालन का अधिकार सत्तापक्ष को है वैसे ही सरकार को भी यह ध्यान रखना चाहिए कि संसद में कामकाज लायक माहौल बनाना उसकी जिम्मेदारी है। वैसे इस जिम्मेदारी का निर्वाह तभी हो सकता है जब विपक्ष तार्किक रवैये का परिचय दे। यदि विपक्षी दल हंगामा करने पर अड़ जाएं तो फिर सत्तापक्ष चाहकर भी कुछ नहीं कर सकता। कहना कठिन है कि इस बार पक्ष-विपक्ष संसद में कैसे तेवर दिखाएंगे, लेकिन उनसे अपेक्षित यही है कि वे संसद का इस्तेमाल चुनावी अखाड़े की तरह न करें।

नहीं सुधरे हालात

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सचिवालय एनेक्सी में पंचम तल के अधिकारियों के साथ दो दिन पहले जो बैठक की, वह अनायास नहीं थी। उन्होंने समस्या की सही नब्ज पर हाथ रखा था। यह सच है कि लोगों को सरकार के कामकाज से कम और योजनाओं पर अमल न होने से ज्यादा शिकायतें हैं। सेवाओं और योजनाओं की जमीनी स्तर तक डिलीवरी नहीं हो पा रही है, जो कि वास्तविक रूप से आम जनता से जुड़ी हुई हैं। अगले साल होने वाले आम चुनाव में आम जनता इसी का मूल्यांकन करेगी। लोकहित की सेवाओं और योजनाओं की गति काफी सुस्त तो है ही, इसमें छोटे-छोटे भ्रष्टाचार के मामले भी खूब फल-फूल रहे हैं। चाहे वह स्वच्छ भारत मिशन के तहत शौचालय बनाने का मामला हो या गरीबों के आवास की बात हो। राशन कार्ड का मुद्दा हो या निश्शुल्क बिजली कनेक्शन का मामला हो। वृद्धावस्था पेंशन हो या विधवा पेंशन। इसे लेकर लोगों में बढ़ते असंतोष से योगी सरकार चिंतित है।

अधिकारियों के केवल पेंच कसने से काम नहीं चलने वाला है। परिणाम न देने वाले अफसरों को उचित दंड देने का यही समय है

योजनाएं अच्छी होते हुए भी पारदर्शिता के साथ उनका उचित लाभ पात्रों तक नहीं पहुंच रहा है। आखिर ऐसा क्यों है, सरकार के कामकाज में जो तेजी है उस गति से सरकारी मशीनरी क्यों नहीं चल पा रही है, आखिर कोई तो होगा उसका जिम्मेदार? उस जिम्मेदार की तलाश के बजाय नई सरकार के सवा साल पूरे होने के बाद भी अधिकारियों के केवल पेंच कसने से काम नहीं चलने वाला है। ढिलाई बरतने पर पिछले दिनों कई अधिकारियों पर कार्रवाई भी हो चुकी है लेकिन, उसे पर्याप्त नहीं कहा जा सकता। वस्तुतः परिणाम न देने वाले अफसरों को उचित दंड देने का यही समय है और दंड भी ऐसा जो नजीर साबित हो।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या नवाज शरीफ और उनकी बेटी मरयम की गिरफ्तारी से पाकिस्तानी चुनावों में उनकी पार्टी को फायदा मिलेगा?

आज का सवाल

क्या जाकिर नाइक के प्रत्यर्पण पर मलेशिया के रवैये को देखते हुए भारत कूटनीतिक संबंधों पर पुनर्विचार करे

अपनी राय और अधिक तक पहुंचाने के लिए अपने मोबाइल के मैसेज बॉक्स में जाकर POLL लिखें, स्पेस देकर Y, N या C लिखकर 57272 पर भेजें
Y -हां, N–नहीं, C–कह नहीं सकते

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

हमारी मूल प्रकृति पर घातक हमला

हृदयनारायण दीक्षित

अपनी राजनीतिक प्रतिबद्धता के पक्ष में बोलना गलत नहीं है, लेकिन अपने अनुभूत तथ्यों को राजनीति के लिए गलत ठहराना उचित नहीं होता

गाली और गोली एक जैसी। दोनों का लक्ष्य हिंसा होता है, लेकिन दोनों में आधारभूत अंतर भी है। गोली शरीर छेदकर बाहर निकल जाती है और कभी कभी मर्मस्थल में अटक भी जाती है। शरीर में फंसी गोली बड़ी पीड़ा देती है। गाली ऐसी ही गोली है। वह मर्मस्थल में पैठकर प्रतिपल पीड़ा देती है। कांग्रेस नेता शशि थरूर राजनीतिक पराजय से भयभीत हैं। उन्हें 2019 के आम चुनाव में भाजपा की जीत का डर सता रहा है। उन्होंने कहा है कि 'भाजपा दोबारा सत्ता में आने के बाद नया संविधान लिखेगी और भारत हिंदू पाकिस्तान बनेगा।' थरूर का यह बयान भारतीय संविधान, जनतंत्र, हिंदू परंपरा और भारतीय जनगणमन की मूल प्रकृति पर सीधा हमला है। 'हिंदू पाकिस्तान' का शब्द प्रयोग हिंदू जीवनशैली के विरुद्ध गाली जैसा है। उनका बयान हिंदू अंतर्मन में गोली जैसा फंस गया है। व्यथा और पीड़ा गहरी है। कांग्रेस ने भी उनके बयान से पिंड छुड़ाया है। दुखद आश्चर्य है कि भारी विरोध के बावजूद थरूर अपने बयान को सही ठहराने की बौद्धिक कसरत किए जा रहे हैं। शब्द की शक्ति बड़ी होती है। शब्द के गर्भ में अर्थ होता है। पतंजलि ने शब्द प्रयोग में सावधानी के निर्देश दिए थे कि 'शब्द का सम्यक ज्ञान और सम्यक प्रयोग ही अपेक्षित परिणाम देता है।' थरूर बहुपठित राजनेता हैं। उन्होंने जर्मन दार्शनिक वाल्टेयर को पढ़ा होगा। वाल्टेयर ने कहा था कि 'यदि आप संवाद चाहते हैं तो पहले अपने शब्दों को परिभाषित करो।' थरूर परिभाषित करें कि 'हिंदू पाकिस्तान' का अर्थ क्या है? पाकिस्तान का सरकारी अर्थ एक राष्ट्र-राज्य है। एक ऐसा देश जो आतंकवाद का खुला विश्वविद्यालय है। जहां हिंदू मारे जाते रहे हैं। उनकी संख्या लगातार घटने पर है। वहां ईश निंदा के बहाने राज्य प्रायोजित हत्याएं होती हैं। हिंसा और रक्तपात पाकिस्तान की सामान्य जीवनशैली है। मूलभूत प्रश्न है कि क्या हिंदू ऐसा कर सकते हैं? हिंदूमन अपनी मूल प्रकृति से ही सभी विचारों का आदर करता है। पाकिस्तान में भिन्न विचार की जगह नहीं। बम और बंदूकें ही 'पाक विचार' हैं। पाकिस्तानी लोकतंत्र भी हिंसा का ही पर्याय है। चुनाव अभियान भी बम विस्फोट के शिकार हैं।

पाकिस्तान और भारत का अंतर सर्वविदित है। भारत प्राचीन राष्ट्र है और पाकिस्तान मजहबी आधार पर 1947 में बना अप्राकृतिक अस्वाभाविक मुल्क। भारत की हिंदू बहुलता में सभी आस्थाओं पंथों का आदर है इसलिए यहां मंदिरों के घंटे, मस्जिदों की अजान और गिरिजाघरों की प्रार्थनाएं समवेत हैं। सब तरफ प्राचीन हिंदू भूमि की सांस्कृतिक ज्ञानगंध है। लेकिन पाकिस्तान में गोली बारूद की दुर्गंध के अलावा शेष क्या बचा है? थरूर भी ऐसा ही मानते होंगे। उन्होंने हिंदू प्रकृति का भी अध्ययन किया है। उनकी लिखी पुस्तक 'व्हाई आइ एम ए हिंदू' काफी चर्चित रही। पुस्तक के लेखकीय अंश में उन्होंने '21वीं सदी के विश्व के लिए हिंदुत्व को आदर्श आस्था' बताया है। एक साक्षात्कार में उनसे पुस्तक की इसी मुख्य बात पर प्रश्न किए गए। थरूर की स्थापना बड़ी थी। उन्होंने दोहराया 'हिंदुत्व पर मैं विश्वास करता हूं, 21वीं सदी की दुनिया के लिए यह परिपूर्ण धर्म (रिलीजन) है। इसमें तर्क और विवेचन हैं। उन्होंने अपनी पुस्तक में प्रयुक्त ऋग्वेद का उद्धरण दोहराया, तब न सत् था। न असत्य, न जन्म, न मृत्यु। कौन जानता है सत्य? सर्वोच्च शासक भी जानता है कि नहीं जानता।' आश्चर्य है कि राजनीतिक कारणों से थरूर को अपनी लिखी पुस्तक के लिए भी प्रतिबद्धता नहीं है।

थरूर राजनीतिक अंतर्विरोध से ग्रस्त हैं। कांग्रेस की राजनीतिक धारा भिन्न हैं। वह एक संप्रदाय के व्यापक समर्थन के लिए हिंदू विरोध की सीमापार करती दिखाई पड़ती है। थरूर के अपने अध्ययन विश्लेषण में 'हिंदुत्व सारी दुनिया का आदर्श धर्म दिखाई पड़ता है।' अध्ययन अनुभूति दूसरी है, लेकिन राजनीतिक प्रतिबद्धता दूसरी। वह किताब में लिखते हैं, 'हिंदुत्व में विश्वास के पहले विश्लेषण और तार्किकता है। यहां तक कि ईश्वर भी परीक्षण निरीक्षण के दायरे में है।' यहां थरूर अपने हिंदू होने पर गर्व करते दिखाई पड़ते हैं। वह सहिष्णुता को भी हिंदू विचार का केंद्र बताते हैं 'सहिष्णुता का अर्थ है कि आपके पास एक सत्य है। दूसरे के पास दूसरा। उसे असहमत होने का अधिकार है। हमें दूसरों के सत्य का आदर करना चाहिए। भिन्न विचार और विश्वास के स्वीकार की यह परंपरा हिंदुत्व का केंद्रीय तत्व है। यही भारत की लोकतांत्रिक संस्कृति का मूलाधार है।' उनके कथन में असहमति का आदर हिंदुत्व की संपदा है। यह संपदा उनके अनुसार 3500 वर्ष पुरानी है। उनकी मानें तो भाजपा के दोबारा जीत जाने के बाद ऋग्वेद से लेकर विवेकानंद और गांधी, हेडगेवार तक प्रवाहमान यह विरासत अचानक समाप्त हो जाएगी। हिंदू आतंकवादी हो जाएंगे। भारत पाकिस्तान जैसा क्रूर देश बन जायेगा।

थरूर की किताब में व्यास, याज्ञवल्क्य, पतंजलि, महावीर, बुद्ध, शंकराचार्य और रामानुज के साथ कबीर, नानक, मीराबाई, विवेकानंद और ओशो 'हिंदुत्व के महान लोग' हैं। ऐसे सभी पूर्वज हिंदू अनुभूति और जीवनशैली का विकास हैं। पुस्तक के अंत में हिंदुत्व की राजनीति है। अपनी राजनीतिक प्रतिबद्धता के पक्ष में लिखना गलत नहीं है, लेकिन अपने अनुभूत तथ्यों को राजनीति के लिए गलत ठहराना उचित नहीं होता। गांधी जी भी सार्वजनिक जीवन में थे। उन्होंने यरवदा जेल से पंडित नेहरू को पत्र में लिखा था कि 'मैं धर्म नहीं छोड़ सकता। इसलिए हिंदुत्व छोड़ना असंभव है। हिंदुत्व के कारण ही मैं ईसाइयत, इस्लाम और अन्य पंथों को प्रेम करता हूं। इसे मुझसे अलग कर दो तो मेरे पास कुछ नहीं बचेगा।' हिंदू इस उपमहाद्वीप के विरल मनुष्य हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्क आधारित दर्शन के कारण हिंदू जीवनशैली आदर्श है। मूल प्रश्न है कि क्या कोई दल हजारों वर्ष प्राचीन सभ्यता, संस्कृति और दर्शन को बदल सकता है? यहां दीर्घकाल तक इस्लामी अंग्रेजी सत्ता रही। वे तमाम कोशिशों के बावजूद भारत का हिंदू अंतर्मन नहीं बदल पाए। कांग्रेस ने इस पर विदेशी सेक्युलरवाद थोपने का प्रयास किया। वामदल भी हिंदुत्व के विरोध में सक्रिय रहे। हिंदुत्व का प्रवाह जस का तस ही बना रहा।

यहां थरूर ने हिंदू होने का अपना ही मंतव्य खारिज किया है। वह जानते हैं कि संविधान नहीं बदला जा सकता। आपातकाल के दौरान संविधान के 53 अनुच्छेद बदले गए थे। बाद में देश और संविधान अपनी राह चला। इसका कारण हिंदू मन ही था। थरूर की ही किताब का एक अंश पठनीय है। लिखते हैं, 'आप सहिष्णुता के लिए गलत होने का अधिकार दीजिए।' थरूर बड़ी गलती के अभियुक्त हैं। हिंदू सहिष्णु हैं। थरूर को गलत होने का अधिकार है, लेकिन हिंदू चिंतन में सुशिक्षित को गलत होने का अधिकार नहीं है। इसे यहां 'प्रज्ञा अपराध' कहा गया है। हिंदू अपने देश को माता कहते हैं। हिंदुस्तान कभी भी पाकिस्तान नहीं हो सकता। यह प्रकृति और संस्कृति निर्मित राष्ट्र है। हिंदू अपने राष्ट्र की ऋद्धि, सिद्धि और समृद्धि के लिए सजग हैं। थरूर ने जानबूझकर सोची समझी रणनीति के चलते हिंदुओं को अपमानित किया है। इसके बावजूद थरूर का क्षमा याची न होना दुर्भाग्यपूर्ण है।

(लेखक उत्तर प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष हैं)
response@jagran.com

अवधेश राजपूत

पाकिस्तान में उथल-पुथल

सतीश कुमार

सेना शरीफ के दल को हराने के लिए जोर आजमा रही है वहीं शरीफ की गिरफ्तारी से सियासी हवा का रुख बदल सकता है

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ और उनकी बेटी मरयम की गिरफ्तारी से पाकिस्तान की राजनीति में एक नया मोड़ आया है। पाकिस्तानी चुनाव से ठीक पहले शरीफ का यह दांव साफ संकेत करता है कि वह सेना के साथ दो-दो हाथ करने के लिए तैयार हैं। बीते दिनों मरयम शरीफ ने ट्वीट किया था कि पाकिस्तान के लोकतंत्र पर जहरीला सर्प बैठा हुआ है। गिरफ्तारी के बाद भी शरीफ के तेवर बदले नहीं हैं। उन्होंने कहा कि हमें देश के लिए जो कुछ करना था, हमने किया और अब जनता की बारी है। 25 जुलाई को पाकिस्तान में चुनाव होने हैं। संसदीय और प्रांतीय चुनाव एक साथ होंगे। वहां सियासी माहौल में सरगर्मियां बढ़ गई हैं। वैसे सब कुछ उसी ढर्रे पर चल रहा है जैसे सेना प्रमुख जनरल कमर जावेद बाजवा तय करते हैं। कहने के लिए पाकिस्तान में निरंतर लोकतांत्रिक व्यवस्था मजबूत हो रही है। 2013 से लेकर 2018 तक लोकतांत्रिक सरकारें अपना कार्यकाल पूरा कर पाई हैं। शक्तियों का हस्तांतरण चुनावी नतीजों के आधार पर हो रहा है। कार्यवाहक प्रधानमंत्री नासीर उल-मुल्क पाकिस्तानी सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश रह चुके हैं। उनकी छवि ठीक ही रही है। चुनाव में अंतरराष्ट्रीय पर्यवेक्षकों को भी निगरानी के लिए बुलाया गया है। कई विदेशी पत्रकारों को भी निमंत्रण दिया गया है। 272 सीटों के लिए बहुदलीय व्यवस्था के अनुरूप चुनाव संपन्न होगा। चार प्रांतीय विधानसभाओं में भी चुनाव साथ में ही होगा। पाकिस्तान का चुनाव आयोग इस बात की गारंटी दे चुका है कि चुनाव हर लिहाज से निष्पक्ष और स्वतंत्र होंगे। प्रत्येक पार्टी चुनाव आयोग के निर्देशों का पालन करेगी। जिस भी दल को 172 सीटें मिलेंगी, उसकी सरकार बनेगी।

पाकिस्तान के संसदीय चुनाव की भूमिका किसी अन्य देश के लोकतांत्रिक चुनाव की तरह दिखती है। वहीं अगर पर्दे के पीछे के मंजर को देखें तो पूरी सच्चाई महज एक लोकतांत्रिक मंचन दिखाई देता है। सब कुछ पूर्व निर्धारित है। लोकतंत्र की निर्मम हत्या की जा रही है। चुनाव के कुछ दिन पहले पाकिस्तान के सबसे बड़े दल के नेता नवाज शरीफ को 10 साल की सजा दे दी गई। उनकी राजनीतिक उत्तराधिकारी बेटी मरयम को भी नहीं बख्शा गया। यह बात दीगर है कि पाकिस्तानी सेना में अनुशासन और आदेश पालन की एकरूपता है। सेना अध्यक्ष का आदेश अकाट्य माना जाता है। उसी रिपोर्ट के बाद शरीफ और सेना के बीच धींगामुश्ती शुरू हो गई। सेना ने पूरी तरह से मन बना लिया कि किसी भी तरीके से शरीफ पुनः सत्ता में न आ सकें। पहले चरण में एक के बाद दूसरा आरोप जड़ दिया गया। पुनः संवैधानिक व्यवस्था का उल्लंघन करते हुए अनुच्छेद 62 और 63 के अंतर्गत शरीफ को हमेशा के लिए राजनीतिक परिदृश्य से बाहर फेंक दिया गया। दूसरे चरण में उनकी बेटी, दामाद और भाई को निशाना बनाया गया।

अब सेना तीसरे चरण का दांव चल रही है। पिछले चुनाव में उनकी पार्टी भारी बहुमत से विजयी हुई थी। विशेषकर पंजाब में शरीफ की लोकप्रियता सबसे ज्यादा है। सेना उनकी पार्टी को कमजोर करने का हर एक दांव आजमा रही है। वह आइएसआइ और कई संस्थाओं के माध्यम से उनके महत्वपूर्ण नेताओं को डरा-धमका रही है कि पीएमएल(एन) के मंच से चुनाव मत लड़ो। जो लोग ऐसा नहीं करते, उन्हें जेल में डाला जा रहा है। पीएमएल के उम्मीदवारों का जबरन हस्तांतरण इमरान खान की पार्टी में किया जा रहा है। विस्थापन इतने बड़े पैमाने पर हो रहा है कि तहरीक-ए-इंसाफ के सदस्य हतोत्साहित हैं। इतनी बड़ी तादाद में बाहरी लोग या विरोधी पार्टी के सदस्य उनके बीच आ जाएंगे तो इससे उनके राजनीतिक हित ही प्रभावित होंगे।

पाकिस्तानी चुनाव पर नजर रखने वाले इस बात से भलीभांति परिचित हैं कि सेना की पसंदीदा पार्टी तहरीक-ए-इंसाफ है। ये सब क्यों और कैसे हुआ। यह भी समझना कम रोचक नहीं है। पाकिस्तान के 71 वर्षों के इतिहास में तीन वर्ष तक सेना ने सीधा शासन किया। शेष वर्षों में सेना की कोशिश रही है कि छद्म नागरिक शासन के द्वारा 'डमी' लोकतंत्र की बहाली की जाए। 2007 में बेनजीर भुट्टो को चुनावी दंगल से हटाने के लिए सेना ने शरीफ का हाथ थामा। तब अत्यंत ही नाटकीय ढंग से पब्लिक रैली के दौरान भुट्टो की हत्या करवा दी गई। उस समय शरीफ सेना के साथ ताल से ताल मिलाकर चल रहे थे। 2013 में जब शरीफ सत्ता में आए तब तक सेना और उनके बीच संबंध मधुर बने रहे। 2016 के बाद परिस्थितियां बदलने लगीं। सेना प्रत्यक्ष सत्ता के पक्ष में नहीं है। परवेज मुशर्रफ के बाद की स्थिति 'डमी लोकतंत्र' की रही है।

हर चुनाव में सेना के लिए एक पिट्ठू राजनीतिक दल का होना आवश्यक है। सेना पीएमएल और पीपीपी को पहले आजमा चुकी है। सेना का उनसे भरोसा उठ चुका है। सेना का आतंकी समूहों को भी पूरा समर्थन है। मसलन हाफिज सईद की ही मिसाल लें। चुनावी प्रक्रिया में हाफिज सईद को लेना सबसे सहज था, लेकिन इसमें कई दिक्कतें थीं। सईद की पार्टी का पंजीकरण चुनाव आयोग के अंतर्गत नहीं हुआ था। उस पर मुंबई आतंकी हमले का आरोप भी था। साथ ही पाकिस्तान का एक वर्ग उसे समर्थन नहीं देता। ऐसे हालात में इमरान खान की पार्टी सेना के समीकरणों में फिट बैठी। पिछले दो वर्षों से इमरान ने सेना की तारीफों के तमाम पुल बांधे हैं। इमरान ने ही शरीफ के विरोध में जन आंदोलन शुरू किया था। तब महीने भर तक पाकिस्तान की राजनीतिक व्यवस्था ठप पड़ गई थी। इमरान यह सब सेना की शह पर कर कर रहे थे।

इस चुनाव की निष्पक्षता का महत्वपूर्ण मुद्दा मीडिया को लामबंद करने को लेकर भी है। शरीफ की पार्टी की खबरें मीडिया से गायब होती जा रही हैं। ऐसा करने वाले समाचार पत्र को सेना और खुफिया एजेंसियों द्वारा तंग किया जा रहा है। पाकिस्तान के प्रतिष्ठित अखबार 'डॉन' पर शिकंजा कसता जा रहा है। हॉकर्स को हिदायत दी गई है कि इस समाचार पत्र की प्रतियां न बेचें। पत्रकारों को जबरन जेल में डाला जा रहा है। सेना मीडिया पर गिद्ध दृष्टि टिकाए हुए है। इसकी पुष्टि खुद मेजर जनरल आसीफ गफूर ने की है जब उन्होंने कहा, 'सेना इस बात की निरंतर निगरानी कर रही है कि कौन से लोग देश और सेना के खिलाफ लिख रहे हैं।' एक वरिष्ठ महिला पत्रकार गुल बुखारी जो निरंतर सेना की आलोचना करती थीं उन्हें न्यूजरूम से ही अगवा करके सैनिक छावनी में नजरबंद कर दिया गया। अब शरीफ की गिरफ्तारी के बाद पाकिस्तान के राजनीतिक समीकरण बदल सकते हैं। वहीं सेना की कवायदों पर किसी को कोई संदेह नहीं है। सेना शरीफ की पार्टी को हराने के लिए हर हथकंडा आजमा रही है।

(लेखक हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में राजनीति शास्त्र विभाग के प्रमुख हैं)
response@jagran.com

ऊर्जा

प्रेम

कहते हैं कि एक बार अनेकानेक भौतिक उपलब्धियां हासिल कर चुका व्यक्ति एक बार भगवत्ता को उपलब्ध संत के पास पहुंचा और बोला कि मुझे परमात्मा को पाना है। मुझे परमात्मा तक पहुंचने का मार्ग बता दीजिए। संत ने उसकी आंखों में गौर से झांका तो उन्हें वहां सूक्ष्म अहंकार ही परमात्मा को भौतिक उपलब्धियों की तरह ही प्राप्त कर लेने की जिद करता नजर आया। उनका हृदय करुणा से भर उठा। उन्होंने उससे पूछा तुमने कभी किसी से प्रेम किया है। नहीं, इसका मुझे वक्त ही नहीं मिला। मुझे तो बस परमात्मा तक पहुंचने का राज बता दीजिए। इस पर संत ने कहा कि याद करिए। स्त्री, पुरुष, पशु, पक्षी किसी को भी देखकर कभी हृदय में प्रेम की चाहत उठी हो। नहीं। ऐसी बेकार चीजों के लिए मेरे पास वक्त नहीं। उसकी गर्वपूर्ण बात सुनकर संत को उस पर दया आई और वे निराश भाव से सिर हिलाकर बोले, तब व्यर्थ है। परमात्मा से तुम्हारा मिलन कभी नहीं हो सकता। यह सुनकर वह व्यक्ति आश्चर्यचकित हुआ।

संत ने स्पष्ट किया-प्रेम हालांकि है सांसारिक ही, फिर भी वह परमात्मा की अभिव्यक्ति है। जब भी तुम प्रेमपूर्ण भाव से देखते हो या कोई तुम्हारी ओर देखता है तो उस वक्त परमात्मा की अभिव्यक्ति ही होती है। यही प्रेम गहरा हो तो समर्पण का अभ्युदय होता है। समर्पण से ऐसी प्रार्थना का जन्म होता है, जिसमें कोई मांग नहीं होती। प्रार्थना से भक्ति भाव का उदय होता है और भक्त और परमात्मा के बीच के आवरण गिरने लगते हैं। पूरी तरह अहंकार शून्य होकर भक्त केवल प्रभु की ही आकांक्षा करता है और तब प्रभु को आना ही पड़ता है। तब परमात्मा और भक्त में कोई भेद नहीं रह जाता। इसलिए जिसने प्रेम को महसूस किया, उसे स्वतः ही परमात्मा की झलक मिल जाती है। सांसारिक प्रेम के माध्यम से भी हम खोजते परमात्मा को ही हैं। तभी कोई भी पुरुष या स्त्री हमें आकर्षित भले ही कर ले किंतु सर्वगुण संपन्न नहीं नजर आता। चुपके से हमारा मन कह ही देता है कि अगर इसमें ऐसा होता तो और भी अच्छा होता। सर्वगुण संपन्न (संपूर्ण) केवल परमात्मा ही है, जिसे पाने के लिए हमें प्रेम रूपी द्वार को खोलना होगा और फिर आवश्यकता होगी प्रेम को गहराते जाने की। शेष स्वतः ही होता चला जाएगा।

अजय गोंडवी

पाठकनामा

pathaknama@nda .jagran.com

सोच बदलने की दरकार

शहरीकरण की दयनीय दशा शीर्षक से लिखे अपने लेख में संजय गुप्त ने देश के शहरों में बढ़ती कचरे की समस्या को देश के विकास में सबसे बड़ी बाधा बताया है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली जैसे महानगर में भी कूड़े का पहाड़ बनना सचमुच देश के लिए बहुत शर्मनाक और निंदनीय है। महात्मा गांधी ने कहा था कि आंतरिक और बाहरी साफ-सफाई, स्वच्छता ईश्वर की अनुभूति के साधन हैं। मैले शरीर और उस पर अशुद्ध मस्तिष्क के साथ हम ईश्वर का आशीर्वाद नहीं पा सकते। स्वच्छ शरीर किसी गंदे शहर में वास नहीं कर सकता। देश में बढ़ती कचरे की समस्या के लिए सरकार, प्रशासन और आम नागरिक बराबर के जिम्मेदार हैं। गंदगी चाहे कूड़े-करकट की हो या फिर पर्यावरण की हो, कई बीमारियों की जड़ है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी माना है कि भारत में प्रति व्यक्ति औसतन लगभग 6500 रुपये बीमारियों पर ही बर्बाद होता है। इसके अनुसार मोदी का स्वच्छ भारत अभियान देश के आमजन पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकता है और गरीब लोगों के खून-पसीने की कमाई इलाज में बर्बाद होने से कुछ हद तक बच सकती है। कुछ लोग यह सोचते हैं कि हम अपने घर की साफ-सफाई करकें घर का कूड़ा करकट गली-मुहल्ले फेक देंगे तो हम बीमारियों से बच जाएंगे, लेकिन ऐसी निम्न सोच वालों को एक बात याद रखनी चाहिए कि अगर इस कूड़े करकट से मच्छर पैदा होंगे तो वे उनके घर तक भी पहुंच सकते हैं और बीमारियों को फैला सकते हैं। शहरों की कूड़े करकट से हो रही दयनीय दशा को सुधारने के लिए सही दिशा में सरकार, प्रशासन और आमजन को कदम बढ़ाने होंगे। राजेश चौहान, जालंधर

देश में पेड़ों की कमी

आज देश पेड़ों की कमी से जूझ रहा है, जिसका सीधा असर हमारे जीवन पर पड़ रहा है। दिल्ली जो भारत की राजधानी है, काफी समय से प्रदूषण में सबसे आगे निकल गई है। जिन पेड़-पौधों को हमने अपने स्वार्थ के लिए काट दिया उनकी कमी आज सभी प्राणियों को महसूस हो रही होगी। सरकार हजारों पौधे वितरण करती है, लेकिन क्या पेड़ बांटने मात्र से ही जिम्मेदारी खत्म हो जाती है? हर ग्रीन बेल्ट को हरित पट्टी में बदलने का हमारा संकल्प होना चाहिए। मात्र पौधे वितरण से इस प्रदूषण की भयंकर समस्या से निपटना संभव नहीं है। पेड़ों की कटाई रोकना और उनकी देखभाल करना बहुत जरूरी है।

आचार्य राम कुमार बघेल शास्त्री, पलवल

अस्तित्व का सवाल

इलाहाबाद का नाम प्रयागराज करने की मांग बलवती हो रही है। इलाहाबाद सर्वमान्य विश्वव्यापी नाम है। इसका स्वतंत्रता संग्राम में बहुत योगदान रहा है। इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के लोगों ने हर क्षेत्र में झंडे गाड़े हैं। प्रयाग भी सांस्कृतिक नाम है, परन्तु एक को स्थापित करने में दूसरे का अस्तित्व ही समाप्त कर देना न तो तर्कसंगत है और न ही न्यायोचित। इलाहाबाद एक बड़ा विस्तृत शहर है। अतः इसे तर्कसम्मत सीमा में विभाजित करने पर दोनों का विकास होगा और ऐतिहासिक/सांस्कृतिक धरोहर भी बनी रहेगी।

solidking5@gmail.com

नेताओं के बोल

अपनी खास पहचान रखने वाले कांग्रेस नेता शशि थरूर के उस बयान पर हंगामा होना ही था जिसमें उन्होंने कहा था कि अगर 2019 के आम चुनाव में भाजपा जीतती है तो भारत हिन्दू पाकिस्तान बन जाएगा। शशि थरूर महज एक नेता ही नहीं, बल्कि लेखक और विचारक के तौर पर भी जाने जाते हैं। उनसे इस तरह के बयान के क्या मायने हैं? वे किसके प्रति चिंता दिखा रहे हैं? असल में जब इन नेताओं के पास कहने और करने के लिए कुछ नहीं होता है तो ये हिंदू-मुस्लिम की बातें करने लगते हैं।

rohitjha.rjw0@gmail.com

कुमारस्वामी का दर्द

कर्नाटक में कुमारस्वामी का दर्द अब छलक उठा है। वह अब सार्वजनिक रूप से इसे बयां कर रहे हैं। करें भी क्यों न, कांग्रेस ने हद कर दी है। पहले तो भाजपा को रोकने के लिए बिना शर्त समर्थन दिया, लेकिन सरकार बनते ही पद को लेकर खींचतान शुरू कर दी। जब बिना शर्त समर्थन दिया था तो कुमारस्वामी पर छोड़ देना चाहिए था कि वह जैसे चाहें सरकार चलाएं। अगर वह कांग्रेस के किसी विधायक को मंत्री बनाना चाहते तो ठीक, नहीं तो बाहर से समर्थन देते रहना चाहिए था। क्या इसी तरह कांग्रेस खींचतान कर कर्नाटक व देश में सरकार बनाने का दंभ भर रही है?

सार्थक, गाजियाबाद

सीख लेने की जरूरत

भारी बारिश ने देश के अनेक हिस्सों को अपनी चपेट में लिया है। इससे बचने के लिए सरकार ने बार-बार अलर्ट भी जारी किया, बावजूद इसके काफी जनधन की हानि हुई है। सड़कों के गड्ढो व निचली बस्ती में पानी भरने, पहाड़ों के दरकने, कई कच्चे मकानों के गिरने, गली-मोहल्ले के जलमग्न होने से बहुत नुकसान के अलावा परेशानी भी हुई है। पंचायतों, नगर परिषदों, नगर पालिकाओं, नगर निगमों व महानगर पालिकाओं की लापरवाही भी इस दौरान सामने आई है। माना कि प्राकृतिक प्रकोप का अपना अलग रंग होता है और उससे यकायक मुकाबला करना मुश्किल ही नही नामुमकिन भी है, किन्तु ठोकर खाकर तो सीखा ही जा सकता है।

mahesh_nenava@yahoo.com

ट्वीट-ट्वीट

भाजपा की मौजूदा सरकार के दौर में कांग्रेस और उसके नेताओं को कई बार निशाना बनाया गया है, लेकिन हम हतोत्साहित नहीं हुए। हमारे अध्यक्ष अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से लेकर सभी अधिकारों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं।

अशोक गहलोत@ashokgehlot51

आज राहुल गांधी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की दुहाई दे रहे हैं, लेकिन जब उनके शरारती तत्व मधुर भंडारकर की फिल्म इंदु सरकार के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे थे तब वह कहां थे। जिन लोगों ने आपातकाल पर बनी उस फिल्म का प्रदर्शन रुकवाया मैं उनके नाम दे सकता हूं। क्या आप उन्हें पार्टी से बाहर निकालोगे?

शहजाद जयहिंद@Shehzad_Ind

यह सुनकर अच्छा लगा कि सरकार हिमा दास को 2020 के ओलंपिक खेलों की तैयारी के लिए टार्गेट ओलंपिक पोडियम स्कीम के तहत सभी तरह की सहायता के अलावा हर महीने 50,000 रुपये की वित्तीय मदद देगी।

विनायक जैन@vinayak_jain

कल भारत और इग्लैंड के बीच हुए मैच के नतीजे को भूल जाएं और इस पर गौर करें कि अपने करियर में अधिकांश मौकों पर छठे नंबर पर खेलते हुए एक बल्लेबाज ने दस हजार रन पूरे कर लिए। महेंद्र सिंह धौनी की विलक्षण उपलब्धि।

हर्षा भोगले@bhogleharsha

जनपथ

उत्तर भारत से गए बदरा जैसे रूठ,
धान न लगने पा रहा वृक्ष हो रहे ठूंठ।
वृक्ष हो रहे ठूंठ रोज दर्शन दे जाएं,
किंतु न गिरती बूंद किसानों को तरसाएं।
तरसें सबके नैन रोज तक-तक के उप्पर,
किंतु न देते इंद्र किसानों को कुछ उत्तर।

– ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व. नरेन्द्र मोहन, संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक (दिल्ली एनसीआर) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 23359961-62, नोएडा कार्यालय : 0120-3915800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 28 अंक 362